DELHIIN/2007/20081 Date of Publication: 13/07/2019 G-3/DL(N)/202/2016-18

अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

वर्ष–13 अंक–2 जौलाई 2019 पृष्ठ 12 वजन 20 ग्राम

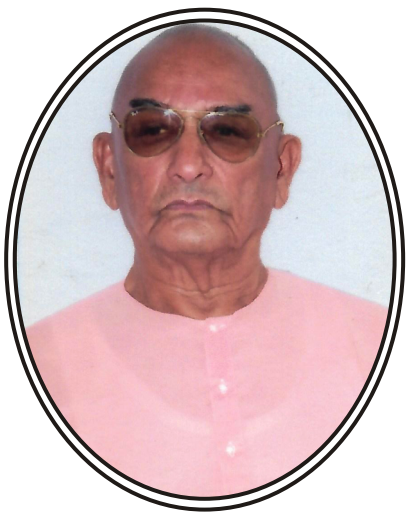

तत्वदर्शी माहात्मा श्री परमचेतनानंद जी

संस्थापकः

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल (रजि. सं. S/20762)

सत्संग भवन – सी॰एस॰/ओ॰सी॰एफ॰ नं॰ 6, ब्लॉक–जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85

मो॰ : 9810344596, 011–27574151

ई–मेलः atmagyanp@gmail.co, वेबसाईटः www.atmagyanprakashmandal.org

सम्पादक : प्रेमी गजेन्द्र सिंह
बी–99, विजय विहार, फेस–2, दिल्ली–110085

इस अंक में प्रकाशितः–

1. सन्त समागम के बिना मानव मोक्ष पद को प्राप्त नहीं कर सकता है।
2. मानव धर्मनीति को जीवन में अपनाकर ही महान बन सकता है।
3. अध्यात्म ज्ञान के बिना मानव के अन्दर अशान्ति बढ़ती जी रही है।
4. जीवन मुक्त जीवात्मा ही परमात्मा का समदर्शी सेवक बन सकती है।
5. मोह निद्रा में सोये मानव को जगाने में निष्काम योगी ही सक्षम होते हैं।
6. अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थः

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार (कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग–1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन

महात्मा जी द्वारा जारी ऑडियो एवं वीडियों कैसेट्सः

1. चेतन वाणी–1 (ऑडियो कैसेट)
2. चेतन वाणी–2 (ऑडियो कैसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाऊँनी वीडियों कैसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाऊँनी ऑडियों कैसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

सत्संग कार्यक्रमः– चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्यंग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

संस्था का वेबसाईट : www.atmagyanprakashmandal.org है

सम्पादकीय

सन्त समागम के बिना मानव मोक्ष पद को प्राप्त नहीं कर सकता है।

मानव जीवन में 'सन्त समागम' अति आवश्यक है क्योंकि सन्त समागम से मानव में ज्ञान जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है उस जिज्ञासा को ज्ञान प्राप्त करके शान्त किया जा सकता है। ज्ञान प्राप्त कर मानव निरन्तर सुमरन एवं साधन करता हुआ मोक्ष पद को प्राप्त कर सकता है। जीवात्मा को चौरासी लाख योनियों का भ्रमण करने के बाद मनुष्य जन्म मिलता है जो सभी जन्मों से श्रेष्ठ है यह श्रेष्ठ इसीलिए है कि इस जन्म में ही सन्त समागम के द्वारा ज्ञान मिल सकता है और ज्ञान का साधन करने से ही मोक्ष पद प्राप्त हो सकता है। यह मनुष्य योनि ही कर्म प्रधान योनि है अन्य सभी योनियाँ भोग योनियाँ हैं इस मनुष्य योनि में अध्यात्म ज्ञान से निष्काम कर्म करता हुआ मानव मोक्ष का अधिकारी बनता है अध्यात्म ज्ञान बाहर से प्राप्त किया गया ज्ञान नहीं है यह ज्ञान तो अन्दर से उपजने वाला ज्ञान है जिसे सच्चे सन्त के द्वारा उजागर किया जाता है इसीलिए कहा गया है कि–

"सन्त समागम तीर्थ राजा, प्रभु मिलन का यही दरवाजा"

अध्यात्म ज्ञान बाहर से मोल नहीं खरीदा जा सकता है इसे तो परमात्मा के सच्चे सन्त मानव के अन्दर प्रत्यक्ष अनुभव कराते हैं इस ज्ञान से मानव का सकाम जीवन निष्काम बनता है। संसार में सभी जीवों का जन्म सकाम होता है परन्तु परमात्मा का निष्काम ज्ञान जब मानव को मिल जाता है तब वह गुरू कृपा से अपने जीवन को निष्पाप बना सकता है यह गोपनीय रहस्य सन्त समागम से ही समझ में आता है। सारे मानव समाज के लिए ज्ञान एक ही होता है। जब सच्चे सन्त के द्वारा परमात्मा के शब्द का ज्ञान करा दिया जाता है तब मानव परमात्मा के शब्द में सुरति जोड़कर सुमरन करता है तो वह उसे ज्ञान चक्र तक पहुँचा देता है परमात्मा का वह शब्द ही जीवात्मा को अपनी ओर चुम्बक की तरह खींचता है। परमात्मा के इसी शब्द पर धरती और आकाश आधारित है। यह शब्द ही सभी जीवों के अन्दर समाया हुआ है। इसी शब्द से सभी जीव प्राणियों के मुख वाणी में आवाज आ रही है इसी शब्द के सुमरण से मोक्ष द्वार खुलता है। जब सन्त परमात्मा के शब्द का सुमरन कराते हैं तो अन्दर ब्रह्म प्रकाश होता है जिससे साधक का मोह अन्धकार दूर हो जाता है अर्थात सेवक के अन्दर ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और उसे अपने अन्दर की अनन्त दिव्य शक्तियाँ दिखायी देने लगती है। मोह अन्धकार दूर होने से मानव के अन्दर सच्ची शान्ति स्थापित हो जाती है जब साधक का आहार व्यवहार शुद्ध हो जाता है तो उसके अन्दर ब्रह्मनाद गरजने लगता है और ब्रह्म वर्षा बरसने लगती है जिससे उसका पाप रूपी मैला धुल जाता है। अज्ञानता के कारण मानव चोरी जैसे अपराध करता है और जीवन में अशान्त रहता है परन्तु जब उसे सच्चा ज्ञान हो जाता है तो उसे ज्ञान मिलते ही पूर्ण शान्ति मिलती है और वह चोरी जैसे अपराध को छोड़ देता है उसका मन निर्मल हो जाता है ज्ञान से सकामी जीवन निष्कामी बन जाता है। निरन्तर साधन सुमरन करता हुआ मानव एक दिन मोक्ष पद को प्राप्त कर लेता है इसलिए सन्त समागम सबसे महत्वपूर्ण है।

मानव धर्मनीति को जीवन में अपनाकर ही महान बन सकता है

आज मैं सभी प्रेमी पाठकों को राजनीति और धर्मनीति की जानकारी दे रहा हूँ। राजाओं के द्वारा बनायी गयी नीति को राजनीति कहा जाता है तथा परमात्मा के द्वारा बनायी गयी नीति धर्मनीति कही जाती है। राजाओं के द्वारा बनायी गयी नीति में अन्याय छिपा रहता है क्योंकि प्रत्येक राजा अपने राज्य का विस्तार करने के लिए दूसरे देशों की प्रजा का विनाश कर उस राज्य की सीमा पर अपना अधिकार जमा लेता है वह प्रकृति तत्वों का दोहन कर एटम बम, अणुबम तक विकसित कर लेता है और उनका प्रयोग कर दूसरे देशों की प्रजा को अन्याय पूर्वक मार भी देता है परन्तु जब तक कोई भी राजा धर्मनीति को स्वीकार नहीं करता है तब तक उसके जीवन में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती है। धर्मनीति को जानकर जब तक मानव सन्त से ज्ञान प्राप्त नहीं करेगा तब तक उसका अधर्मी जीवन धर्मात्मा नहीं बनेगा अधर्मी राजा कभी भी प्रजा का न्याय नहीं कर सकता है। किसी भी राष्ट्र के राजा को यह जानकारी नहीं होती है कि मनुष्य जीवन में आने वाली जीवात्माओं के जीवन का क्या उद्देश्य है? वह प्रजा के ऊपर राज्य करके राजसुख तो भोगता है परन्तु उसे अपने तथा प्रजा के जीवन के उद्देश्य की जानकारी नहीं होती है। मनुष्य जन्म के उद्देश्य के विषय में समझाने के लिए ही सन्त समाज में आते हैं। सच्चे सन्त की पहचान न होने के कारण राजा उनका सत्संग न सुनकर उनकी अवहेलना करते हैं। राजा भौतिक शिक्षा के द्वारा कितना भी भौतिक विकास कर ले परन्तु उसे तथा उसकी प्रजा को सच्चा सुख और सच्ची शान्ति नहीं मिल सकती है। जड़ प्रकृति के विकास से विष तो निकल सकता है परन्तु इसमें अमृत नहीं मिल सकता है इसलिए राजा को चाहिए कि वह धर्म नीति का आचरण करे। सन्त से सत्य ज्ञान प्राप्त कर आत्मिक विकास करे आत्मिक विकास से अमृत की प्राप्ती होती है जिससे मानव का मृत्यु रोग समाप्त होता है। राजा और प्रजा को आत्मिक विकास से सनातन सुख मिल सकता है। आज किसी भी राष्ट्र का ध्यान अध्यात्म विद्या व उसका प्रत्यक्ष बोध कराने वाले सन्त की ओर नहीं जा रहा है इसीतिए राजा एवं प्रजा का नैतिक पतन निरन्तर हो रहा है अध्यात्म विद्या को जाने बिना कोई भी राजा प्रजा का न्याय नहीं कर सकता है। अध्यात्म विद्या के अभाव में अज्ञानता निरन्तर बढ़ती जा रही है इसी के कारण राजा और प्रजा दोनों ही परमात्मा की मर्यादाओं का उलंघन कर मानवता के विपरीत आचरण कर रहे हैं तथा परमात्मा के आरोप में फंसते जा रहे हैं। जब तक जीवात्माओं को परमात्मा का ज्ञान कराने वाली अध्यात्म विद्या का बोध नहीं होगा तब तक वे परमात्मा की

सेवा व साधन भजन कैसे कर सकेंगें? परमात्मा के ज्ञान और उसकी सेवा के बिना जीवन के उद्देश्य की प्राप्ती कैसे हो सकेगी? जिस परमात्मा से जीवात्मा का जन्म हुआ उसका तो ज्ञान ही नहीं हुआ और साधन भजन के बिना उसकी तो कोई सेवा ही नहीं हुई तो जीवन का लक्ष्य कैसे प्राप्त होगा? अतः प्रत्येक राजा व प्रजा को यह समझ लेना चाहिए कि जीवन में धर्मनीति को अपनाकर अध्यात्म विद्या को प्राप्त करें तथा साधन भजन करके जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करें इस अध्यात्म विद्या को कोई श्रद्धावान एवं सेवा भावना से युक्त जिज्ञासु ही प्राप्त कर सकता है श्रद्धालु व्यक्ति ही अध्यात्म विद्या की साधना से स्थूल जगत को पार कर सूक्ष्म जगत में प्रवेश करते हैं और अपने अन्दर सुप्त अवस्था में रहने वाली अनन्त दिव्य शक्तियों को जाग्रत करते हैं अध्यात्म विद्या की साधना करने वाले साधक के अन्दर ब्रह्म सूर्य का उदय होने से ज्ञान का प्रकाश फैल जाता है इस ज्ञान प्रकाश में साधक अपने अन्दर सूक्ष्म से अति सूक्ष्म तत्वों का भी अनुभव कर लेता है जो मानव इस अध्यात्म विद्या से वंचित रह जाता है वह हमेशा अज्ञान अन्धकार से भरे अधर्म क्षेत्र में अधोगति को प्राप्त होता रहता है। इस अधोगति से बचने के लिए समय के सच्चे सन्त तत्वदर्शी महात्मा श्री परम चेतनानन्द जी के सान्निध्य में "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11 दिल्ली 85 में पधारकर धर्मनीति को समझे और अध्यात्म विद्या का प्रत्यक्ष बोध करके अपने मानव जीवन को सफल बनाये।

भजन

अज्ञानी रहकर इस दुनिया में, धर्मनीति न जान सका।
परमपिता तेरे घट के अन्दर, उनके दर्शन कर न सका।।
राजनीति में उलझ रहा, कभी सत्संग में आ न सका।
सन्त की वाणी सत्संगत में, इन कानों से सुन न सका।।
मानव जन्म को पाकर भी, अध्यात्म विद्या न जान सका।
मानव जीवन व्यर्थ गंवाया, योग साधन को कर न सका।।
दुर्लभ मानुष तन को पाकर, गुरू सेवा में लगा न सका।
गुरू के निस्वार्थ प्रेम को, इस जीवन में पा न सका।।
चेतन सन्त की वाणी सुन लो, जो गुरू ज्ञान को पा न सका।
वो मानव अपने जीवन को, जीवन मुक्त बना न सका।।

अध्यात्म ज्ञान के बिना मानव के अन्दर अशान्ति निरन्तर बढ़ती जा रही है

सभी मनुष्यों के अन्दर शान्ति का स्रोत छिपा है उसकी जानकारी न होने के कारण मानव में अशान्ति बढ़ती जा रही है। सच्ची शान्ति का स्रोत अध्यात्म ज्ञान है जब तक मानव सच्चे सन्त की शरण में जाकर उनसे श्रद्धापूर्वक अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त नहीं करता है तब तक उसका आत्मिक विकास सम्भव नहीं है। आत्मिकविकास से ही मानव के अन्दर सच्ची शान्ति स्थापित हो सकती है। आज का मानव भौतिक साधनों से सम्पन्न होते हुए भी अशान्त इसलिए है कि उसने अध्यात्म ज्ञान के अभाव में अपना आत्मिक विकास नहीं किया है। श्रद्धावान व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करके बहुत जल्दी ही परमशान्ति का अनुभव कर सकता है। सब मानवों के अन्दर अमृत छिपा है जिसे मनुष्य जन्म में साधन करके प्रकट किया जा सकता है। अमृत ज्ञान जहर को भी समाप्त कर सकता है। अमृत को प्राप्त कर मृत्यु रोग मिटाया जा सकता है। जब तक मानव सच्चे सन्त का सत्संग श्रवण नहीं करता है तब तक मानव का मन अशान्त रहता है। मानव जीवन को बदलने के लिए आत्मा परमात्मा सम्बन्धी चर्चा सन्त के मुख से निरन्तर सुनते रहना चाहिए इससे मन बुद्धि एवं चित्त के संस्कार बदलने शुरू हो जाते हैं। परमात्मा की मर्यादा जानकर जब मानव अपने आपको उसके अनुरूप बना लेता है तब वह परमात्मा की मर्यादा के विपरीत आचरण नहीं करता है। अध्यात्म ज्ञान का साधन करके मानव अपने अन्दर परमात्मा के निस्वार्थ प्रेम को प्रकट कर लेता है जिससे उसका स्वार्थी जीवन निस्वार्थ बन जाता है वह अपने जीवन को साधन से निष्पाप एवं निष्कलंक बना लेता है। आज का मानव अध्यात्म ज्ञान के बिना विपरीत दिशा में जा रहा है जिस कार्य के लिए उसे यह मानव शरीर मिला था वह कार्य तो उसने किया ही नहीं इसलिए हमेशा जीवन के विपरीत काम करते हुए अशान्त एवं तनावयुक्त रहा। मनुष्य जन्म में सच्चे सन्त का सत्संग श्रवण नहीं किया तथा ज्ञान प्राप्त नहीं किया इसलिए जीवन सुधर नही सका सन्त की बात न सुनकर उन्हें एक किनारे पर कर दिया इस प्रकार ज्ञान का दरवाजा बन्द कर दिया है। यदि सच्चे सन्त के प्रति सद्भावना प्रकट नहीं की जाती है तो समाज में अनेक प्रकार के दुराचार, भ्रष्टाचार बढ़ते चले जायेंगे और मानव समाज पूरी तरह से विकृत हो जायेगा। अतः सच्चे सन्त का राजा व प्रजा सभी से आग्रह है कि वे सभी "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर–11, दिल्ली में पधारकर सच्चे सन्त का सत्संग सुनकर उनसे अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त करे। परमात्मा का यह ज्ञान ही मानव जीवन को अन्धकार से प्रकाश में ला सकता है मोह रूपी अन्धकार को मिटाकर ही मानव उजाले में आ सकता है।

यह भारत भूमि सन्तों की भूमि है यहाँ हर युग में योग साधन करने वाले योगी रहते हैं। आज भी ऐसे निष्काम योगी सन्त परम चेतनानन्द जी सारे विश्व को ज्ञान देने में समर्थ हैं। सत्य धर्म तो सभी मानवों का एक ही है भले ही उन्होंने अलग–अलग मजहब की दीवार खड़ी कर रखी है। मै इस गोपनीय रहस्य का सन्देश पूरे मानव समाज को इसलिए दे रहा हूँ कि बिना अध्यात्म ज्ञान के समाज में कभी भी शान्ति स्थापित नहीं हो सकती है इसलिए मानव जन्म को सफल बनाने के लिए अध्यात्म ज्ञान अति आवश्यक है आज का मानव ज्ञान को स्वीकार नहीं कर रहा है संसार के भोगों में फंसकर वह ज्ञान को नकार देता है। आप सच्चे सन्त का सत्संग अवश्य सुने सत्संग सुनने से मानव के विचार अवश्य बदलेंगे तथा ज्ञान प्राप्त करके मानव जीवन में क्रांतिकारी बदलाव अवश्य होगा।

भजन

अध्यात्म ज्ञान मेरे गुरूवर का, जीवन में क्रान्ति लाता है।
जीवन के सब दोष मिटाकर, गुरु से मेल कराता है।।
अध्यात्म ज्ञान को पाकर सेवक, धन्य–धन्य हो जाता है।
गुरू अविनाशी की सेवा में, जीवन बलि चढ़ाता है।।
गुरू शब्द के सुमरन सें, वह भाव सागर तर जाता है।
काम, क्रोध मोह लोभ की अग्नि, गुरू अमृत से बुझाता है।।
जीवन की इस फुलवारी में, जीवन फूल खिलाता है।
गुरू ज्ञान की प्रेम धारा से, निस्वार्थ प्रेम जगाता है।।
अज्ञान अन्धेरा मिटे जन्मों का, ज्ञान का दीप जलाता है।
गुरू अविनाशी के दर्शन से, मन का भरम मिटाता है।।
चेतन योगी निष्काम ज्ञान से, पापों का हवन कराता है।
जन्म मरण का रोग मिटाकर, जीवन मुक्त बनाता है।।

जीवन मुक्त जीवात्मा ही परमात्मा का समदर्शी सेवक बन सकती है

हम सभी जीवात्माएँ परमात्मा की रूहानी "रूह" के अंशी आत्मारूपी "रूह" है तथा जड़ शरीर रूपी प्रकृति का चोला पहनकर इस संसार में विचरण कर रहे हैं। ये जीवात्माएँ दो प्रकार की हैं एक तो वे जीवात्माएँ हैं जो जन्म मरण के बन्धन में बँधी हैं वे अधर्म क्षेत्र अर्थात् काल क्षेत्र से नहीं निकल पाती हैं उन्हें धर्म क्षेत्र का कोई ज्ञान नहीं होता है वे केवल भोग योनि तक ही सीमित रहती हैं और परमात्मा द्वारा दिये गये भोगों को निशुल्क भोगती है दूसरी जीवात्मा वे है जो मानव शरीर में ज्ञान प्राप्त कर योग साधन करते हुए जीवन मुक्त हो चुकी है अर्थात् ऐसी जीवात्माएँ जन्म मरण के बन्धन से मुक्त है जिन्हें शरीररूपी काल क्षेत्र में रहते हुए भी धर्म क्षेत्र का ज्ञान होता है। सभी जीवात्माओं को जीवित रहने के लिए हवा, अग्नि व पानी की आवश्यकता होती है। इस सृष्टि के अन्दर जीवन मुक्त जीवात्माएँ समदर्शी सेवक बनकर परमात्मा की आज्ञानुसार सेवाकार्य करती है तथा प्रलय काल में भी विचलित नहीं होती है। परमात्मा ही सभी जीवों का परमपिता है उसी की मर्यादा के अनुसार सभी जीवों के खाने पीने व रहने की व्यवस्था होती है जैसे भोग योनियों में आये जीवों के लिए परमात्मा ने भोग पदार्थों की व्यवस्था की है उसी प्रकार कर्म प्रधान मनुष्य योनि में आयी जीवात्माओं के लिए परमात्मा ने सत्य ज्ञान की व्यवस्था भी की है। अज्ञान अन्धकार में भटकी अज्ञानी जीवात्माओं को यह मालूम नहीं होता है कि हमारा बार–बार जन्म मरण क्यों हो रहा है और यह हमारे लिए बड़ा भारी दुख है फिर भी परम दयालु परमपिता परमात्मा अपने प्रिय बच्चों में से किसी एक को सन्त बनाकर जीवों के उद्धार के लिए भेजते हैं। सन्त इन अज्ञानी बच्चों को सत्संग सुनाकर अपने सच्चे घर वापस जाने की प्रेरणा देते रहते हैं। जो नालायक बच्चे सन्त का सत्संग न सुनकर नश्वर भोगों में ही लगे रहते हैं उनके अन्दर ज्ञान का प्रकाश नहीं हो पाता है इसलिए वे अपने सतघर वापस नहीं लौट पाते हैं। परन्तु जो लायक जीवात्माएँ सच्चे सन्त का सत्संग सुनती हैं वे सत्संग से प्रभावित होकर समय के तत्वदर्शी सन्त से ज्ञान प्राप्त करते हैं तथा लगन शील होकर योग साधन निरन्तर करते हैं वे प्रकृति के प्रभाव को ज्ञान से समाप्त करके लौकिक जगत से अलौकिक जगत में पहुँच जाते हैं और अपने अन्दर अनेक अलौकिक दिव्य शक्तियों को अनुभव करते हैं अन्त में रूहानी जगत में परम आनन्द को प्राप्त करके सुरक्षित रहते हैं वे काल के भय से निर्भय हो जाते हैं। इस प्रकार परमात्मा के लायक बच्चे सन्त से उनके

सनातन ज्ञान को पाकर साधन भजन में लग जाते हैं वे गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करके उनकी मर्यादा के अनुसार सन्त की सेवा करके उनके सान्निध्य में रहकर उनके बच्चों पर विश्वास करते हैं वे इस नश्वर सृष्टि को त्यागकर अपने सतघर को सुरक्षित चले जाते हैं उनका अपने सच्चे परमपिता से मिलन हो जाता है परन्तु जो अज्ञानी नालायक बच्चे संसारी भोगों में ही सुख समझते हैं वे बार–बार जन्म मरण रूपी घोर यातनाएँ सहन करते हैं उनका अपने परमपिता से कभी मिलन नहीं होता है इस प्रकार सन्त समाज का उद्धार करने के लिए ज्ञान गंगा लेकर समाज में आते हैं और अज्ञानी जीवात्माओं को सत्संग सुनाकर उनके अन्दर ज्ञान जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करते हैं तथा श्रद्धावान जिज्ञासु को ज्ञान का प्रत्यक्ष अनुभव कराकर उसके मनुष्य जीवन को सफल करते हैं जड़ प्रकृति को समदर्शी आत्मा चलाती है इन आत्माओं को पीछे से परमात्मा की शक्ति मिलती है इस प्रकार मुक्त होकर आत्मा परमात्मा की समदर्शी सेवक बन जाती है।

भजन

सत्संग सुनकर गुरू सेवक में, जागे ज्ञान संस्कार।
ऐसी लगन लगी मेरे मन को, ढूँढे मोक्ष का द्वार।।
मोक्ष का मार्ग गुरू दिखावे, जीवन के आधार।
सन्त ने आत्म रूप लखाया, जागे भाग्य हमार।।
जीवन नौका पार हुई जब, गुरू बने पतवार।
ज्ञान का झरना बड़ा सुहाना, बरसे अखण्ड फुहार।।
ज्ञान खटोला उड़ा गगन में, सेवक शब्द सवार।
तीन लोक का भ्रमण करके, जागी सुरत हमार।।
इस जगत से पार मिला है, रूहानी गुरू का द्वार।
सुन्न शिखर में लगी समाधि, जल गये सभी विकार।।
सुन्न शिखर से वापस आया, ज्ञान गंगा सिर धार।
चेतन योगी ने अध्यात्म ज्ञान से, किया सेवकों का उद्धार।।

मोह निद्रा में सोये मानव को जगाने में निष्काम योगी ही सक्षम होते हैं

आज सम्पूर्ण विश्व का मानव मोह रूपी निद्रा में सोया हुआ है। संसार की कोई भी शक्ति उसे इस मोह निद्रा से जगाने में सक्षम नहीं है केवल कोई निष्काम योगी ही अपने योगबल से इसे जगाने में सक्षम है क्योंकि वे ज्ञान से जागे हुए होते हैं उनके अन्दर परमार्थ की भावना होती है और वे सभी प्रकार के प्रपंचों से दूर रहते हैं। इसीलिए कहा गया है कि –

मोह निशा सब सोवनहारा, देखहि स्वप्न अनेक प्रकारा।
एहि जग जामिनी जागहि जोगी परमार्थ प्रपंच वियोगी।।

इस जड़ चेतन की रचना में तीन अवस्थाएँ, प्रत्यक्ष दिखायी देती हैं (1) जाग्रत अवस्था (2) निद्रावस्था (3) स्पप्नावस्था। इनके लिए किसी प्रमाण की भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि ये सभी जीवों में प्रत्यक्ष दिखायी देती है। ये तीनों अवस्थाएँ अज्ञानमय जीवन की ही होती हैं इन्हीं अज्ञान अवस्थाओं में ही चिरकाल से मानव का जन्मना एवं मरना हो रहा है। जीव इस संसार रूपी रंगमंच पर नाटक के पात्र की तरह वेष बदल–बदलकर आता है और अपना प्रदर्शन करके चला जाता है इस आवागमन में उसे भयंकर जन्म–मृत्युरूपी दुख सहन करना पड़ता है उस दुख की घड़ी में उसका कोई भी मददगार नहीं होता है। जीव चिरकाल से इन्ही अज्ञान अवस्थाओं में विचरण कर रहा है अज्ञान की इन तीन अवस्थाओं के अतिरिक्त एक चौथी अवस्था ज्ञानावस्था होती है, योगी इस ज्ञानावस्था में ही सदैव ब्रह्म सूर्य के उजाले में रहते हैं उनके जीवन में कभी अन्धकार नहीं रहता है ऐसे योगी ही मानव को मोह रूपी निद्रा से जगाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। जैसे हम प्रातः काल में नींद से जागने पर सूर्य के उजाले को देखते हैं वैसे ही जीव मोह निद्रा से जागने पर ब्रह्म सूर्य के उजाले को देखता है और वह सदा के लिए जग जाता है इस ज्ञान अवस्था में बने रहने के लिए अविनाशी चेतन ज्ञान का साधन निरन्तर करना पड़ता है क्योंकि जैसे शरीर पर पहने हुए कपड़े पर धूल पड़ने से वह मैला हो जाता है वैसे ही मानव जीवन में किये गये कर्मों की धूल जीवन को गन्दा कर देती है। इस धूल को साफ करने के लिए साधन–भजन अति आवश्यक है अज्ञान अवस्था से ऊपर उठने के लिए ही यह मनुष्य जन्म मिला है इसमें साधन करके जन्म–मरण के भयंकर कष्ट से बचा जा सकता है मृत्यु को जीतने के लिए अमृत ज्ञान की परम आवश्यकता है यह अमृत आत्मा में पहले से ही विद्यमान है इसे समय के तत्वदर्शी सन्त मानव के अन्दर ही उजागर करते हैं जिससे मृत्यु रूपी महारोग से बचा जा सकता है। तत्वदर्शी सन्त मानव को प्रगाढ़ मोह निद्रा से जगाकर उस अलौकिक अवस्था में पहुँचा देते हैं। जहाँ ब्रह्म सूर्य के अविनाशी प्रकाश में अध्यात्म जगत दिखायी देता है, इसे ही धर्म क्षेत्र कहा जाता है। इस अध्यात्म क्षेत्र में पहुँचकर मानव शाश्वत शान्ति एवं अलौकिक आनन्द का अनुभव करता है इस सनातन ज्ञान को प्राप्त करने के लिए ही मानव जन्म मिलता है लेकिन भेदी सन्त के बिना इसकी प्राप्ती नहीं हो सकती। जब तक जीवन मोह रूपी नींद से नहीं जग जाता है तब तक वह अपने जीवन के लक्ष्य को भी प्राप्त नहीं कर सकता है।

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा साप्ताहिक अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन दिनांक 30.06.2019 दिन रविवार को तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के सान्निध्य में "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11, दिल्ली–85 में किया गया। इस सत्संग में विभिन्न प्रदेशों के केन्द्रों से सक्रिय प्रेमी सम्मिलित हुए। सत्संग में प्रवचन करते हुए महात्मा जी ने श्रृद्धालु प्रेमियों को समझाया कि यह सारा संसार मोह रूपी निद्रा में सोया हुआ है इसे जगाना सामान्य व्यक्ति के वश की बात नहीं है इसे तो केवल परमात्मा के भेदी निष्काम योगी ही जगाने में समर्थ हो सकते हैं मानव जीवन भर अज्ञान की तीन अवस्थाओं जागृत, निद्रा एवं स्वप्न अवस्था में ही जन्म मरण के चक्र में पड़ा रहता है उसे ज्ञान अवस्था का कोई बोध नहीं होता है जब तक मानव ज्ञान से नहीं जुड़ता है तब तक वह मानव जीवन के उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाता है मानव जन्म के उद्देश्य की प्राप्ती सन्त समागम से होती है सन्त समागम में सभी संशयों एवं भ्रान्तियों को समाप्त किया जाता है। मानव जीवन को सफल बनाने के लिए सन्त समागम अति आवश्यक है। आरती के बाद सत्संग समाप्त किया गया।

पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

1: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका पढ़कर एवं अध्यात्म प्रेमियों से अध्यात्म ज्ञान की चर्चा सुनने पर मेरे अन्दर अध्यात्म ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। मैं अपनी इस जिज्ञासा को शान्त करने के लिए "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11, दिल्ली में पहुँचा। जहाँ पर मैंने तत्वदर्शी सन्त श्री परमचेनतानन्द जी से अध्यात्म ज्ञान का प्रत्यक्ष अनुभव किया। मेरा रोम–रोम ज्ञान प्रकाश से भर गया। इसके लिए मैं महात्मा जी का हमेशा ऋणी रहूँगा।

– हंसराज वैरागी, गिंझोड़ (नोयड़ा)

2: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका पढ़कर तत्वदर्शी सन्त की महिमा का पता चलता है। तत्वदर्शी सन्त के रूप में स्वयं गुरू महाराज जी सत्संग सुनाने एवं ज्ञान देने के लिए आते हैं। सन्त एवं गुरू की महिमा अवर्णनीय है।

– अशोक शर्मा जेवर (गौतम बुद्ध नगर)

3: आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका "अध्यात्म सन्देश" संसारी प्रभाव को हटाकर अध्यात्म में प्रवेश कराने वाली सर्वोत्तम पत्रिका है। इसे पढ़कर अधम प्राणी भी अध्यात्मिक बन सकता है।

– मा॰ जीत सिंह भाँयगी (मु॰ नगर)

4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में दिये गये अध्यात्मिक भजन हृदय को छूने वाले होते हैं इन्हें पढ़कर परम शान्ति का अनुभव होता है ये संसारी रंग को उतार कर ज्ञान का रंग चढ़ा देने वाले होते हैं।

– कमला देवी ज्ञान माजरा (शामली)

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल संस्था द्वारा साप्ताहिक अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन दिनांक 30.06.2019 दिन रविवार को तत्वदर्शी महात्मा श्री परमचेतनानन्द जी के सान्निध्य में "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी सैक्टर–11, दिल्ली–85 में किया गया। इस सत्संग में विभिन्न प्रदेशों के केन्द्रों से सक्रिय प्रेमी सम्मिलित हुए।

प्रकाशक, मुद्रक एवं महात्मा परम चेतनानन्द, चेतन योग आश्रम, सी.एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग

सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी

मुद्रक : टैन प्रिन्ट्स इन्डिया प्रा. लि., रोहद, हरियाण